उपराग

(मैथिली कवितासंग्रह)

रचयिता
श्रीरमानाथमिश्र 'मिहिर'

प्रकाशक
मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन,
हनुमानगंज, मिश्रटोला,
दरभंगा।

प्रथम संस्करण : फरवरी १९८२

(C) : रचयिता

प्राप्ति स्थान : मैथिली ग्रन्थमाला प्रकाशन,
हनुमानगंज, मिश्रटोला
दरभंगा।

मूल्य : चारि टाका

मुद्रक: दीपेन्द्र झा
मिथिला प्रेस, राजकुमारगंज दरभंगा।

अनुक्रमणिका

आत्म-निवेदन

कागज, छपाइ ओ पाठकक महगीक कारणें मैथिलीमे पुस्तक छपौनाइ साधारण साहसक काज नहि, ताहूमे कविताक पोथीक तँ बाते भिन्न अछि। श्रोता भेंटि जैताह, तालीक गड़गड़ाहटिसँ कान भरि जैत किन्तु पुस्तकक किननिहारक सर्वथा अभाव।

प्रस्तुत पुस्तकसँ पूर्व हमर दुइ गोट कविता-संग्रह एवं दुइ गोटकथा-संग्रहक छोट-छोट पुस्तिका अपने लोकनिक समक्ष आबि चुकल अछि।

एहि संग्रहक अधिकांश कविता मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिका लो अनेको मंच सँ श्रोता ओ पाठक कें सुनबाक ओ पढ़बाक लेल भेटल छनि।

कतेको आत्मीय श्रोता ओ पाठकक आग्रहक कारणें समस्त रचनाकें एकठाम पुस्तकाकार प्रकाशित करक हेतु विवश होमय पड़ल अछि। लेखनसँ लय पुस्तकक प्रकाशन मे आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' एवं पूज्य पितृव्य पं० श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'क—जे सहयोग प्राप्त भेल अछि तकर मूल्य धन्यवाद सन हल्लुक शब्दसँ नहि व्यक्त कयल जा सकैछ। एहि दूनू गोटेक हम जीवन भरि आभारी छिऐन। संगहि श्री भूपेन्द्रझा (मिथिला प्रेस)क प्रति सेहो कृतज्ञता ज्ञापित अछि जनिक अथक परिश्रमे ई अपने लोकनि धरि पहुँचैबामे सक्षम भऽ सकलहुँ अछि। आशा अछि, हमर सहृदय श्रोता ओ पाठक एहि पुस्तिकाक स्वागत करताह।

दरभंगा, — विनीत—

११-२-८२ — सोमिहिर

राग-अनुराग

प्राचीनकालिक 'शब्द'क परिभाषा कर्णेन्द्रिय मात्र ग्राह्य भने मानल जाइत रहल हो, किन्तु आजुक वैज्ञानिक युगमे जखन ध्वनिकें प्रकाशमे परिवर्तित करबाक यान्त्रिक क्रिया प्रशस्त भेल अछि, तखन काव्यक श्रव्य—दृश्य विभाजन स्वतः सुसंगत कहल जायत ।

यदि काव्यकें श्रव्य दृश्य दू भेद संगत, तँ कविताकें— जे मात्रा ओ लयक आश्रित अछि— 'पाठ्ये गेये च सम्मतम्' दुइ प्रकारें विभाजित करब असंगत नहि । किछु कविता एहन होइछ जे पढ़ल जाइछ, शब्द श्रवणसँ विशेष अर्थचिन्तने द्वारा सहृदय संवेद्य होइछ । किछु कविता एहन होइछ जे सुनले पर, छंद-लयक स्वर-विताने पर, प्रीतिप्रद होइछ ।

किन्तु प्रकृत कविताकें पाठ्य ओ गेय दूहू विशेषणक कसौटी पर कसने ओकर सुवर्णत्व सिद्ध कैल जाइछ । 'हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा' कालिदासक एहि उक्तिमे एखनहु ककरहु वैमत्य हो, से बुझना नहि जाइछ ।

... ...

प्रस्तुत कविता-पुस्तिका नव पीढ़ीक हस्ताक्षरी सुविदित कवि एवं मातृभाषाक साधनामे संलग्न सुपरिचित श्रीरमानाथमिश्र 'मिहिर'क रचना थिक । एहिमे उल्लिखित अनेको कविता कविसम्मेलनक मंचसँ प्रशंसित होइत रहल अछि, कविताक कतोक कड़ी लोक-कंठमे गुंजित होइत रहल

अछि। किछु एहनो रचना अछि जे पत्र-पत्रिकाक साहित्यिक स्तम्भके विन्यस्त–प्रशस्त कऽ चुकल अछि। 'पाठ्ये गेये च सम्मतम्' दूहू प्रकारक रचनाक संनिवेश एहि संग्रहमे भेल अछि जे कविक कीर्तिकेँ निश्चय प्रशस्ति देत।

कविता यदि कविभावनाक बिम्ब थिक तँ ओ युग-समाजक गतिविधिक प्रतिबिम्बो थिक। यदि प्रकृतिक रमणीयता कविताकेँ प्रेरित करैछ तँ समय-समाजक विकृतिक रुग्णता कवित्वकें किछु कम नहि उद्वेलित करैछ। एहिमे तात्कालिक समाजरीति ओ राजनीतिक परिप्रेक्ष्यमे किछु एहनो वैकारिक प्रसंग अछि जकर व्यंग्य-बोध श्रोताकेँ तरंगित करैछ।

'उपराग'मे उपालंभे नहि, अनुरागोक राग-रंग अछि। विकारग्रस्त समय-समाजक परिहासे नहि, रसात्मक व्यंग्योक तरंग अछि।

एहिना आगहुँ विरागक आगिए नहि राग-अनुरागक रसभाग सेहो संपृक्त होइत चलओ, दुत्कारहुमे सत्कारक प्रकार चलैत रहओ—एहि इच्छा-प्रतीक्षाक संग रचयिताक प्रति शुभाकांक्षा जे—'वर्धस्व काव्यं विमलीकुरुष्व'।

साशीराशि—
श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन'

'स्वदेश' कार्यालय, दरभंगा।
महाशिवरात्रि (१९८२)

लोकक ठेलम ठेल

बढ़ल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ।
घरमे लोटा एक्के टा छइ बेटा छैक अलेल ॥
गामे गामे गेल सबारी कते चलल छइ रेल ।
बाहर भीतर देखब तैयो लोकक ठेलम ठेल ॥
धरती परती बाँचि न सकलइ आने बचलइ गाछी ।
खुट्टा पर बान्हल छै औखन गाइक संगहि बाछी ॥
बुद्धि विवेको घटलइ लोकक क्रोधे टा छइ मेल ।
बढ़ल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ॥
बाप छलइ एसकरुआ बेटा तकरे छइ सतभैआ ।
देखि घरक ई हाल विकल छइ भूखल पेटे मैआ ॥
झगड़े टा पसरल छइ सबठाँ अपना मे नहि मेल ।
बढ़ल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ॥
चौकी टूटल फेकल छइ आ भूखल छइ संतान ।
राति कोना कऽ खेपब बौआ ! देखब फेर बिहान ॥
पूछै छै संतान पिता सँ हमरा की अछि देल !
बढ़ल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ॥

चोर उचक्का बदल जाइ छइ, बदल जाइ छइ थाना ।
रूप पुरुष केर मौगी सन छइ मौगी केर मरदाना ॥
जौं रहलइ रफ्तार येह तँ देखब आगू खेल ।
बदल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ॥
चिन्ता छइ सन्तानक सबके आ भरोस भगवान ।
देशक सोझाँ ठाढ़ समस्या परिवारक कल्याण ॥
चिन्ता मे संसार पड़ल अछि औं गति ई रहि गेल ।
बदल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ॥
धरती ओ आकाश हमर थिक ई देलक विज्ञान ।
आबहु चेतौ लोक विश्व केर झट पट करी निदान ॥
वर्तमान की देखि रहल छी कल्ह भविष्यक लेल ।
बदल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ॥
माइक-गर्भक शिशु पूछै छइ कहू माय ई बात ।
की अछि राखल हमरा खातिर की कयने छी कात ॥
देखि रहल छी सन्ध्या दूनू मूरल छी रहि गेल ।
बदल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ॥
छुच्छे देव दुआर ताहि पर हम नहिं जोबि सकै छी ।
दूधक बदला पानि कोना हम पोबि सकै छी ॥
पिता सटे छथि चान भाण सँ तैयो छथि ओ फेल ।
बदल जाइ छइ लोक देशमे घटल जाइ छइ तेल ॥
[रचनाकाल—५-१२-७७

अगहन

अगहन मासक राजा छथि आ छथि ई बड़ मसहूर।
रहै अछि सब क्योचूरम चूर॥

सबहक आङन हरियर चूड़ा
के पुछैत अछि खुद्दो गूड़ा
तरहत्थो सन मोट दही पर छाल्ही अछि परिपूर।
रहै अछि सब क्यो चूरम चूर॥

साग सुलभ सरिसब छइ सबके
घोतो तीनो नबके नबके
छातीक हाड़ कूपे छनि आड़े चाहो तनिका तूर।
रहै अछि सब क्यो चूरम चूर॥

नवका धानक भातो नबके
कुलथम साउ तिमन छइ तपते,
रस कुसियारक भेल सुलभ आ नवका चूड़ा गूड़।
रहै अछि सब क्यो चूरम चूर॥

सबहक आङ्न देखब सुरही
बैसल घरमे ढों ढों बुढ़ही
धुथरीमे लय चूड़ा छौंड़ा मेल माय सँ दूर।
रहै अछि सब क्यौ चूरम चूर॥

बाड़ी देखब नार टाल के
ऊँच नीच सबहक कपार के
कम्मल ओढ़ि दैछ भोर मे बान्हि परातो सूर।
रहै अछि सब क्यौ चूरम चूर॥

बाड़ी झाड़ी जे क्यौ कोड़य,
से तरकारी सब दिन तोड़य,
ओकरे घर मे आलू कोबी सजमनि भाँटा मूर।
रहै अछि सब क्यौ चूरम चूर॥

[रचना काल २७-१२-७८



एना कियै ई भऽ रहलइ यै

एना कियै ई भऽ रहलइ यै ?
बन्धु बन्धु मे झगड़ा झाँटी खून खरापा कऽ रहलइ यै,
एना कियै ई भऽ रहलइ यै ?

बेटा लइ छै घूस माय सँ, खर्चा बेसी छैक आय सँ —
बेटीक बाप कनै छै नोरे, कौंढ़ करेजो लऽ रहलइ यै
एना कियै ई भऽ रहलइ यै ?

सब सँ सब बुधियार बनल छइ ई सम्याना कियै तनल छइ
गौतैय विरड़ो तोड़ि खसौतइ से लच्छन सब धऽ रहलइ यै
एना कियै ई भऽ रहलइ यै ?

सब विषधर छै विष सँ मातल, ककरो वश मे क्यो ने जाँतल
सुरसा सन केर पेट बढ़ौने सब पेटे मे लऽ रहलइ यै
एना कियै ई भऽ रहलइ यै ?

तोड़ फोड़ केर होड़ चलल छइ, घाव पैघ बलतोड़ बनल छइ
सहनशील जे छैक समाजक तकरे दुर्गति कऽ रहलइ यै
एना कियै ई भऽ रहलइ यै ?

क्यौ ने सोचइ देश ककर छै, लच्छन एहने जकर तकर छइ
भोगक रोग जकड़ने सबके सब अपने मे कऽ रहलइ ये
एना कियै ई भऽ रहलइ ये !

चढ़लइ दुनियाँ ऊँच चान पर, सूतल छइ तैयो मचान पर
फोट फाट सँ बूझि न सकबइ कोना कतऽ सँ कऽ रहलइ ये
एना कियै ई भऽ रहलइ ये !

तालाबंदी नालाबंदी, काज करय सब मन्दी मन्दी
दोषारोपण करय लोक ई आ लोके तँ कऽ रहलइ यै
एना कियै ई भऽ रहलइ यै !

सबकेँ सब उपदेश छँटै छइ आ सब तरे तऽर कटै छै
सागर सँ जल गेल गगन मे आ पुनि सागर लऽ रहलइ यै
एना कियै ई भऽ रहलइ यै !

[रचनाकाल—१४-५-८१



ई सब एहिना भेल करै छइ

ई सब एहिना भेल करै छइ ।
ढकहन उपद्र अपना पन मे सब के सब क्यौ देल करै छइ
ई सब एहिना भेल करै छइ ॥

राजनीति मे उठा पटक छइ, आजुक युग केर लटक चटक छइ ।
नेता सब अपना मे लड़ि कऽ लोकक सोझाँ खेल करै छइ ।
ई सब एहिना भेल करै छइ ॥

जे भुसकौल जते पढ़बा मे अपन दोष अनका मढ़बा मे
पढ़िकय जे सब दैछ परीक्षा से सब पहिने फेल करै छइ ।
ई सब एहिना भेल करै छइ ॥

घूस न किनहुँ लेबक चाही, पैंच उधार न सेबक चाही
अनका लय सिद्धान्त ठीक ई, आ सब अपने लेल करै छइ ।
ई सब एहिना भेल करै छइ ॥

पिता कपूतक टका गनाबय, कन्यागत केर ठोंठ दबाबय,
तौनीतर मे हाथ मिला कऽ दू नम्बर मे सेल करै छइ ।
ई सब एहिना भेल करै छइ ॥

आदर्शक जे ढोल पिटै छइ सब सँ बेसो वेह लुटै छइ
पुस्तैनी झगड़ा छै कयने मौका पड़ने मेल करै छइ।
ई सब पहिना भेल करै छइ॥

बाप जकर नामो भिखमंगा तकरे बेटा पहिरै अंगा
जकरा रोटी मोन न जुड़इ तकरे लोहिया तेल ढरै छइ।
ई सब पहिना भेल करै छइ॥

जे छल कहियो दानी नामी, तकरे पूतक छइ बदनामी
लछमी केर ई चालि विचित्र कोम्हरो द ऽ चल गेल करै छइ।
ई सब पहिना भेल करै छइ॥

[रचनाकाल—१६-९-८१



सब कहैत अछि वाह वाह

सब देखि कहै अछि वाह ! वाह !
नहि भेटि रहल अछि जगक थाह ।
सब अनके बूझै अछि प्रसन्न
आ अपने सब अछि भेल सन्न

नहि बूझि सकल क्यो मनक आह
सब देखि कहै अछि वाह वाह ।
सब रहय अभावे अस्त व्यस्त
नहि वस्तु कोनो टा छैक सस्त

बेमान जते से तते मस्त
अपहरण करय कहुना आनक
तैं लगा रहल अछि घूमि गस्त

तीसी मे सरिसो फेंटि फाँटि
अपना कें अपने कय उफाँटि
कहि रहल बात अछि छाँटि छाँटि
नहि लेबक छह तँ वाह-वाह
सब देखि कहै अछि वाह ! वाह !

बनियाँ के दुनियाँ देखि रहल
दुनियाँ के बनियाँ जोखि रहल

तूरे धुनियाँ कें धुनि रहल
खुनियें कें खूनी ताकि रहल

ई देखि देखि कय जग तवाह।
सब देखि कहै अछि वाह ! वाह !

बेटा केर बाप सिया बद्धुआ
आ बात करथि लट्टुआ लट्टुआ

नहि मेटि सकै अछि हुनक थाह।
सब देखि कहै अछि वाह ! वाह !!

रोगी अछि रोगे मरक लेल
भोगी अछि भोगे करक लेल

योगी अछि योगे करक लेल
सब लगा रहल अछि ताल मेल

छथि गायक भेटल वेसुराह
सब सूनि कहै अछि वाह ! वाह !!

[रचनाकाल—३०-३-७९

—*—

की सब बढ़लइ

योगी बढ़लइ भोगी बढ़लइ –
घर घर देखू रोगी बढ़लइ ।
नेता आ अभिनेता बढ़लइ,
खेल खेलाड़ी बहुतो बढ़लइ ॥
तइ मे कते विजेता बढ़लइ ।

गाम गाम मे झगड़ा बढ़लइ –
तइ मे बहुतो लवरा बढ़लइ,
टीचर बढ़लइ फीचर बढ़लइ
निरवंशा केर वंशो बढ़लइ ॥

खाना बढ़लइ पीना बढ़लइ –
ठाम ठाम करखाना बढ़लइ
चोर उचक्का थाना बढ़लइ
रंग विरंगक बाना बढ़लइ ॥

सौदा बढ़लइ बाड़ी बढ़लइ –
बल धिगरोक घराड़ी बढ़लइ –
चेला आर चपाटी बढ़लइ –
राजनीति मे पाटी बढ़लइ ॥

ताला बढ़लइ चाभी बढ़लइ –
मुँह दुब्बर के दावी बढ़लइ
पहिने पिबै क्यौ क्यौ ताड़ी –
गामे गाम शराबी बढ़लइ

सुखिया बढ़लइ दुखिया बढ़लइ –
गाम गाम मे मुखिया बढ़लइ,
रक्षा खातिर सैनिक बढ़लइ –
खून खराबी दैनिक बढ़लइ
महगी सब सँ आगाँ बढ़लइ ।

भेदो बढ़लइ भावो बढ़लइ –
जकरा तकरा घावो बढ़लइ
चाहो बढ़लइ पानो बढ़लइ
घुसहा सबके सानो बढ़लइ ।
पोथी बढ़लइ पतरा बढ़लइ –
मरबा खातिर खतरा बढ़लइ –
नंगा बढ़लइ दंगा बढ़लइ,

गाम गाम भिखमंगा बढ़लइ ।
पासो बढ़लइ फेलो बढ़लइ –
रेलो बढ़लइ जेलो बढ़लइ

ईहो बढ़लइ ओहो बढ़लइ,
चीनक संगे रूसो बढ़लइ।
सोना बढ़लइ चानी बढ़लइ —
विलटौआक जनानी बढ़लइ
घर मे भूजी भाङ मुदा नहि,
बाहर बेस फुटानी बढ़लइ।
मानी बढ़लइ दानी बढ़लइ —
ज्ञानी आ विज्ञानी बढ़लइ।
सैतानक सैतानी बढ़लइ, बैमानक बैमानी बढ़लइ।
नेताके नादानी बढ़लइ —
मत दाता के फानी पड़लइ
युवतीक देह जुआनी चढ़लइ,
चिल्लर जकाँ गुमानी बढ़लइ।
लोभी बढ़लइ पापी बढ़लइ
चोरी आर चपाटी बढ़लइ
बहुतो ठाँ उतपाती बढ़लइ
ओजी बढ़लइ खोजी बढ़लइ,
रोजी आ मनमौजी बढ़लइ।
पाटी बढ़लइ पाटा बढ़लइ।
बेना बढ़लइ, वाटा बढ़लइ।
विड़ला बढ़लइ टाटा बढ़लइ, सरकारो के घाटा बढ़लइ।

कस्टम बढ़लइ रुस्तम बढ़लइ –
सरकारो केर कष्टम बढ़लइ,
छोट पैघ के सिस्टम बढ़लइ, तकरा संगहि दुस्टम बढ़लइ ।

रौदी बढ़लइ दाही बढलइ –
गामे गाम तबाही बढ़लइ
चुट्टी बढ़लइ पिपरी बढ़लइ, घर-घर मे विष पिपड़ी फड़लइ ।

अण्डा बढ़लइ वण्डा बढ़लइ –
नगर - नगर मे गुण्डा बढ़लइ,
मोछ मुड़ा मोछ मुण्डा बढ़लइ तीर्थ वर्थ मे पंडा बढ़लइ
दासी बढ़लइ नासी बढ़लइ मैथिल सत्यानासी बढ़लइ ॥

[रचनाकाल २९-२-८०]



कोना कहू मन केहेन लगैयै

जहिया चटिया छलियै अपने, संग दस हीरो रहियै रखने
बाटे घाटे झगड़ा करियै आव ने, कत्तौ क्यो अभड़ै यै ।
कोना कहू मन केहेन लगै यै ॥

बापक बल पर चलै फुटानी, मुसकौलक हम करी जुटानी
तकरे फलई भोगि रहल छी, आ रहि रहि से मोन पड़ैयै ।
कोना कहू मन केहेन लगै यै ॥

जहिया कुर्सी पोनक तर छल, तहिया मोन कते चर फर छल
कुर्सी चल गेल फुर्ती चलगेल सुमरि सुमरि से नोर खसैयै ।
कोना कहू मन केहेन लगैयै ॥

जहिया हमहूँ डिल्ली रहियै, खाली सबके गप्पे कहियै
लप्पे - लप्पे फँकियै किसमिस फुटहा कहुना एखन भेटैयै ।
कोना कहू मन केहेन लगैयै ॥

घूसक कैञ्चा खूब पिटलियै, अंगूरक रस खूब घोंटलियै
आव जुड़य नहिं माड़ पिवै लय तखन कहू मन की सुमरैयै ।
कोना कहू मन केहेन लगैयै ॥

दादा अर्जल तकरा बेचल, जे जत्तहि छल तकरो फेकल
आगाँ पाछाँ किछु ने देखल एखन कोनहुना पेट भरैयै।
कोना कहूमन केहेन लगै यै ॥

धिए पुता टा केलियै अर्जन, बेर जखन छल कयल न वर्जन
झगड़ा झाँटी सदिखन सबा सँ आ तै पर सब रगड़ करैयै।
कोना कहू मन केहेन लगै यै ॥

मुँह लटकौने कहलनि झाजी आब कहै सब हमरा पाजी
सुमरि सुमरि ओ बात पहिलका आगाँ पाछाँ खूब सुझै यै।
तखन कहू मन केहेन लगैयै ॥

[रचनाकाल १-७-८१



खूब लूटै जो............

जकरा जै ठाँ जेना भेटै छौ, खूब लुटै जो
खूब लुटै जो, खूब लुटै जो।
लाभर - जोभर देखै जै ठाँ, खूब सटै जो
खूब सटै जो, खूब सटै जो॥

हऽर बहय से खऽढ़ खाय आ बकरी हेतु अँचार।
घरबैआ लै सुक्खा रोटी पाहुन हेतु सँचार॥
जकरा लगमे सत्ता भेटौ, बैसल मे किछु भत्ता भेटौ,
तकरे तरबा खूब चटै जो, खूब चटै जो......

बाप दरोगा थाना पर छौ, दिल्ली मे छौ नाना
बंकक मालिक तोंही टा छैं, तोरे छौक खजाना
हवलदार सब खबरदार हो, दूर हटै जो, दूर हटैजो...

अपने चोर डकैत बनै छैं, अपने थानेदार।
अपने ठीका बाँटि रहल छैं, अपने ठीकेदार॥
अप्पन मोड़ा अप्पन 'कोठी' खूब भरैजो, खूब भरैजो...

बनल कतेको पूल, कतेको टूटल छन मे।
बनल कतेको 'रूल' कतेको जूटल छन मे॥
राजघाट पर सप्पत खा-खा नाम रटै जो, नाम रटैजो...

भोटक बल पर तोहर लम्बा कोट सियेलौ।
लोहा सिमटो गिट्टी खा खा देह मोटेलौ॥
गादी छौ पंचवर्षा भेटल, खेल करैजो, खेल करैजो...

जनता छौ बेहाल तकर नहि रोच करै जो।
पोता पोती परपोता केर सोच करै जो॥
गगन विहारी नेता छें तो टूर करैजो, टूर करैजो....

अपना चाही भोजन भारी, देशक खातिर ओजन जारी।
नगद नरायन चाही अपना; पत्नी खातिर चाही साड़ी॥
देशक उन्नति करबा खातिर पेट कटै जो, पेट कटैजो....

नेता ओ अभिनेता दूनू खेल करै छै।
छुच्छे भाषण दैक, योजना फेल करै छै॥
दऽकऽ सब अधिकार कोनहुना काल कटैजो, काल कटैजो

सभा मंचपर भीषण भाषण रातारातो घेंट कटै जो...
जकरा जैठाँ जेना भेटै छौ खूब लुटै जो, खूब लुटै जो॥

—००—

खुनियाँ

खुनियाँ छथि खुनियाँ, सबदिना खुनियाँ ।
सैकड़ो बेर खून पचा गेल छथि तैयो छथि एहिना ॥

अनर्थ होइत अछि अइठाम
ओतेक लोक एतेकटा समाज
ककरो पता नहिं—

कनियो कानाफूसी नहिं, क्यो ने बुझि सकल
थाना पुलिस कत्तहु किच्छु ने
किएक औत एलसीसियन
किएक औता दारोगा जी
किएक हैत पंचैतो आ के बनत पंच !

जनैत छैक ओकर बाप, को जनने हैत मरय काल ओ अपने
अपने तँ गेबे कयल, भोगैत छैक बाप
आब ओहो नहिं जीतैक —
आ एही शोकें ओकरो जैब लिखल छैक ।

गर्दनि काटि देलकैक' गर्दनि
भोथहा हाँसू सँ—
जनमैबाक दण्ड भोगैत रहौक बाप
छौँड़ो रहैक वेस कविकाठी आ कहबैका
केने हेतइ कोनो बेभिचार, वा कहने हेतइ कोनो उझट कथा

ककरा लग जेतइ बाप, आ के देतैक गबाही,
सुनतैक के दर्द, अलगौत के कल्ला,
परोपट्टा मे के अछि मर्द ?
बड़का-बड़का हाकिम आ नेता, डरे रहै छइ सर्द

खुनियाँ छइ खुनियाँ
जनथिन उगलाहा दीनानाथ –
आ जनथिन सम्पादक जी,
जनने हैत ओ छौड़ा, कि जनतैक ओकर बाप
मुदा बाप ओकर यैह कहैत छैक जे– खुनियाँ छइ खुनियाँ
गर्दनि काटि लेलथिन भोतहा हाँसू सँ सम्पादक जी,
हुनको की नीक हैतनि ।



हमरा होइए जे.......

हमरा होइए जे जीवन मे खाली कष्टे कष्ट अछि
किएक तँ जतेक सुख भेटल अछि तइसँ बेसी सुखक आकांक्षी छी
आ तैँ हमरा होइए जे कष्टे कष्ट अछि !
ई बात बुझितो जे –
हमरा संतोष नहि अछि
आ इच्छाक अमर लत्ती
बिना कोनो आलन केर –
पचमहला छूबक लेल आकुल आ व्याकुल अछि
तैँ हमरा होइए जे - जीवनमे कष्टे कष्ट अछि ॥

कियैक तँ –
हम अपन मूड़ी खसा धरती दिस
कौखन ने तकैत छी
आ तकरे परिणाम थिक जे –
हमरा मन केँ होड़ैत अछि आ –
हमरा होइए जे जीवनमे खाली कष्टे कष्ट अछि ॥

ई बात बुझितो जे हमर मोनरूपी बोड़ा
बिनु कोनो नोक सवारक फेरल अछि
आ तकरे ई परिणाम थिक जे –
हमरा होइये जे जीवन मे कष्टे कष्ट अछि ॥

जीवनमे सुखक कोनो सीमा आ ने सरहद छै
ओ थिक क्षितिज जे दूरसँ देखला पर –
छूबैत अछि धरती केँ ।

मुदा जौँ जौँ ओकरा अन्तिम सीमाकेँ –
देखक हित आगाँ बढ़ैत जैब –
ओ अहाँसँ दूर बहुत दूर पड़ायल जैत,–
तैँ होइए जे हमरा जीवन मे कष्टे कष्ट अछि ॥

[रचनाकाल—२१-८-८१]



ई सब टा थिक फूसि

ई सब, टा, थिक, फूसि–
ने बेटा ने बेटी ने अरिजन ने परिजन
ने स्त्री, ने स्वामी, ने अप्पन, ने आन
जावत छै काज तावत घरि ताकत
बेर पड़त अपना तँ लेत मुँह दूसि। ई सब टा थिक फूसि ॥

सोचल ने कहियो आ ने सोचैत छी
जीवन केर गाड़ी केँ तैयो घीचैत छी
अन्हड़ बिहाड़ि कते देखल अछि जीवनमे
तिक्ख नोन आ अनोन चीखल अछि तीमनमे
संघर्ष जीवन थिक आ भेटल सफलता
तैयो देखैत छी रहलहुँ अछि हूसि।
ई सब टा थिक फूसि ॥

दौड़ल तँ जाइत छी ठाढ़े छी बिन्दु पर
रेखाकेँ देखि-देखि लेखा करैत छी
बुझ बनल व्यूह मे घोखा पबैत छी
जीवन अछि भेटल कहुना जोबैत छी
गत ओो भविष्य दूनू लड़ि रहले हूसि। ई सब टा थिक फूसि ॥

[रचनाकाल—२६-१०-८०]

आब हम चिन्हैत छी

हम अहाँकेँ नहिं चिन्हैत छलहुँ,
मुदा आब चिन्हैत छी।
भने अहाँ हमरा चिन्हैत छलहुँ,
मुदा आब नहिं चिन्हैत छी॥

हम अहाँ केँ की कहैत छी—
से अहाँ नहिं बुझैत छी

आ अहाँ हमरा जे बुझैत छी, हम से नहिं छी।
हम अहाँकेँ नहिं चिन्हैत छलहुँ मुदा आब चिन्हैत छी॥

जहिया छल काज तहिया तँ चिन्हलहुँ
आब किएक चीन्हब? बेर तँ निमहि गेल
खयने छी की की ने, देने छी की की ने
संग संग कते ठाम कयने छी की की ने
बेर पड़ल हमरा तँ सब टा बिसरि गेल,
जाड़ मासक रौद जकाँ समय तँ ससरि गेल॥

अहाँ छी काबिल हम तँ ढहलेल छी
अहाँ छी नीक लोक हम तँ बुड़िलेल छी
बेर पड़त फेरो–

काठक बासन एक्के बेर चढ़ैत छैक
अहाँ सनक लोक हमरा सनक व्यक्ति केँ
एक्के बेर ठकैत छैक ।

पाँजर लग बैसि अहाँ काटि लेलौं बिट्टू
संग एखन जे कयौ छथि से थिका पिटठू
मोन मुदा राखि लिअऽ

सब टा बुझैत छी, नीचाँ सँ ऊपर धरि आब हम चिन्हैत छी ।
चिन्हैत छलहुँ अहाँ आब नहिं चिन्हैत छी ॥
[रचनाकाल — २७-१२-७८

